

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 23: यदु वंश

5 October 2026



शुकदेव राजाओं की लम्बी सूची को क्षण भर रोककर एक ही शाखा को विशेष रूप से महिमामण्डित करते हैं: यदु का कुल, ययाति के ज्येष्ठ पुत्र का वंश, जिसे अन्य समस्त राजवंशों से इसलिए अलग चुना गया क्योंकि स्वयं परमात्मा एक दिन उसी के आँगन में श्री कृष्ण बनकर चलेंगे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह तेईसवाँ अध्याय तीन अपेक्षाकृत कम ज्ञात राजवंशों का सर्वेक्षण करके ही उस वास्तविक विषय तक पहुँचता है: अनु के वंशजों द्वारा गंगा-डेल्टा के छह पूर्वी राज्यों की स्थापना, एक निःसन्तान राजा का सूखा एक मृगी-पुत्र ऋषि द्वारा समाप्त होना, और नदी से एक दुखी सारथी द्वारा उठाए गए परित्यक्त शिशु की कथा। तभी शुकदेव उस कुल की ओर मुड़ते हैं जिसकी ओर वे वास्तव में हमें ले जा रहे थे, यह बताते हुए कि वह कैसे गौरवशाली शाखाओं में विभक्त हुआ नए नामों के साथ, और अन्त में एक रानी के विस्मय की मर्मस्पर्शी कथा से समाप्त होता है — एक बचाई गई भावी वधू और उस प्रतिज्ञा को पूर्ण करने हेतु बाद में जन्मे पुत्र की। यह अध्याय एक विशाल वंश-वृक्ष की अनेक शाखाओं, और उनमें से उस एक शाखा के विषय में है जिसे स्वयं स्वर्ग ने विशेष रूप से चिह्नित किया।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 23 (त्रयोविंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: ययाति के पुत्रों के वंश
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: चन्द्रवंश में ययाति के चार बड़े पुत्रों अनु, द्रुह्यु, तुर्वसु एवं यदु के वंश
- केन्द्रीय विषय: ययाति के बड़े पुत्रों के वंश, सर्वोपरि यदु का पवित्र वंश जिसमें भगवान् कृष्ण अवतरित होंगे
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 1-38
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

अनु के वंश एवं पूर्वी राज्य

शुकदेव ने कथा आगे बढ़ाई। अनु से सभानर एवं उनका वंश हुआ, तितिक्षु एवं बलि तक। बलि की रानी के द्वारा, ऋषि दीर्घतमा ने छह पुत्र उत्पन्न किए जो पृथ्वी के शासक बने — अंग, वंग, कलिंग, सुह्य, पुण्ड्र एवं ओड्र — और उन्होंने अपने ही नामों पर पूर्व में छह राज्य बसाए।

ऋषि ऋष्यशृंग एवं राजा रोमपाद

अंग के वंश में रोमपाद हुए, जो निःसन्तान थे। एक मित्र राजा की उदारता से उन्हें एक दत्तक पुत्री मिली, जिसका विवाह एक असाधारण ऋषि से करा दिया गया — स्वयं एक मृगी की सन्तान, जिसे नर्तकियों एवं गायकों की कलाओं द्वारा लुभाकर उस सूखाग्रस्त राज्य में लाया गया था। उसी ऋषि के यज्ञ ने वर्षा लौटाई और सन्तान भी प्रदान की; और उसी शक्ति से, वह मित्र राजा स्वयं भी अन्ततः अपने विख्यात पुत्रों का पिता बना।

शान्तां स्वकन्यां प्रायच्छदृष्यशृङ्ग उवाह याम् ।
देवेऽवर्षति यं रामा आनित्युर्हरिणीसुतम् ॥ ८ ॥

śāntāṁ sva-kanyāṁ prāyacchad ṛṣyaśṛṅga uvāha yām deve 'varṣati yaṁ rāmā ānityur hariṇī-sutam

अर्थ: दशरथ ने अपनी ही पुत्री शान्ता दी, जिसका विवाह ऋषि ऋष्यशृंग से हुआ; और जब वर्षा-देव ने वर्षा रोक ली, तब यही ऋषि, जो एक मृगी से उत्पन्न थे, स्त्रियों द्वारा राज्य में लाए गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 8)



अंग राज्य में जब सूखा पड़ता है, पवित्र वन-ऋषि ऋष्यशृंग को राज्य में लाया जाता है और उनके यज्ञ से वर्षा एवं सन्तान दोनों प्राप्त होती हैं — और बाद में, एक समान यज्ञ से, निःसन्तान दशरथ भी अपने प्रसिद्ध पुत्र प्राप्त करते हैं (श्लोक 6-10)।

जब अंग के राज्य को अकाल घेर लेता है, तब पवित्र वन-ऋषि ऋष्यशृंग को भूमि में लाया जाता है और, उनके यज्ञ से, वर्षा एवं सन्तान दोनों प्राप्त होती हैं — और बाद में, एक ऐसे ही यज्ञ से, निःसन्तान दशरथ भी अपने प्रसिद्ध पुत्र प्राप्त करते हैं (श्लोक 6-10)।

कर्ण का दत्तक ग्रहण

अंग के वंश में आगे अधिरथ हुए। निःसन्तान होकर, गंगा के तट पर क्रीड़ा करते समय उन्होंने शिशु कर्ण को — कुन्ती को विवाह से पूर्व उत्पन्न एवं, निन्दा के भय से, उसके द्वारा एक पेटी में प्रवाहित बालक — पाकर अपने पुत्र रूप में ग्रहण किया।

योऽसौ गङ्गातटे क्रीडन् मञ्जूषान्तर्गतं शिशुम् ।

कुन्त्यापविद्धं कानीनमनपत्योऽकरोत् सुतम् ॥ १३ ॥

yo 'sau gaṅgā-taṭe krīḍan mañjūṣāntargataṁ śīśum kuntyāpavidddhaṁ kānīnam anapatyo 'karot sutam

अर्थ: गंगा के तट पर क्रीड़ा करते समय, निःसन्तान अधिरथ ने एक पेटी में बन्द शिशु को पाया — कुन्ती को विवाह से पूर्व उत्पन्न एवं उसके द्वारा प्रवाहित बालक — और उसे अपने पुत्र रूप में ग्रहण किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 13)



पवित्र गंगा के तट पर क्रीड़ा करते हुए, निःसन्तान अधिरथ को एक पेटी में तैरता हुआ एक शिशु मिलता है — कुन्ती की सन्तान — और वे स्नेहपूर्वक उसे अपना पुत्र बना लेते हैं, भावी वीर कर्ण (श्लोक 13)।

पवित्र गंगा के तट पर क्रीड़ा करते हुए, निःसन्तान अधिरथ एक पेटी में तैरते शिशु को — कुन्ती का बालक — पाते हैं और उसे प्रेमपूर्वक अपने पुत्र रूप में ग्रहण करते हैं, भावी वीर कर्ण को (श्लोक 13)।

द्रुह्यु एवं तुर्वसु के वंश भी शुकदेव ने बताए — द्रुह्यु के वंशज प्रचेत, जिनके सौ पुत्रों ने उत्तर में म्लेच्छों पर शासन किया; और तुर्वसु का वंश मरुत तक, जिन्होंने निःसन्तान होकर पूरु के वंश के दुष्यन्त को गोद लिया, यद्यपि दुष्यन्त बाद में अपने ही वंश में लौट गए।

यदु का गौरवशाली वंश

तब शुकदेव ययाति के ज्येष्ठ पुत्र यदु के वंश की ओर मुड़े — एक ऐसा वंश, उन्होंने कहा, असाधारण पुण्य का जो सुनने वालों के समस्त पापों को धो देता है, क्योंकि इसी वंश में परम भगवान्, परमात्मा, मानव-रूप में अवतरित हुए।

ययातेर्ज्येष्ठपुत्रस्य यदोर्वंशं नरर्षभ ।

वर्णयामि महापुण्यं सर्वपापहरं नृणाम् ।

यदोर्वंशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १९ ॥

yayāter jyeṣṭha-putrasya yador vaṁśaṁ naraṛṣabha varṇayāmi mahā-puṇyaṁ sarva-pāpa-haraṁ nṛṇām yador vaṁśaṁ naraḥ śrutvā sarva-pāpaiḥ pramucyate

अर्थ: हे नरश्रेष्ठ, अब मैं ययाति के ज्येष्ठ पुत्र यदु के वंश का वर्णन करूँगा — महान् पुण्य का एक वंश जो मनुष्यों के समस्त पापों को हर लेता है; यदु के वंश को सुनकर, मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 19)

यत्रावतीर्णो भगवान् परमात्मा नराकृतिः ।

यदोः सहस्रजित्क्रोष्टा नलो रिपुरिति श्रुताः ॥ २० ॥

yatrāvatīrṇo bhagavān paramātmā narākṛtiḥ yadoḥ sahasrajit kroṣṭā nalo ripur iti śrutāḥ

अर्थ: इसी वंश में यशस्वी भगवान्, परमात्मा, मानव-रूप में अवतरित हुए। यदु के पुत्र सहस्रजित्, क्रोष्टा, नल एवं रिपु थे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 20)

यादव, माधव एवं वृष्णि

यदु के वंश से, हैहय के द्वारा, शक्तिशाली कार्तवीर्य अर्जुन आए, और, मधु एवं वृष्णि के द्वारा, वे महान् कुल आए जिन्होंने वंशजों को अपने नाम दिए। इस प्रकार, शुकदेव ने कहा, वे यादव, माधव एवं वृष्णि नाम से प्रसिद्ध हुए।

माधवा वृष्णयो राजन् यादवाश्चेति संज्ञिताः ।

यदुपुत्रस्य च क्रोष्टोः पुत्रो वृजिनवांस्ततः ॥ ३० ॥

mādhavā vṛṣṇayo rājan yādavāś ceti sañjñitāḥ yadu-putrasya ca kroṣṭoḥ putro vṛjinavāms tataḥ

अर्थ: वे, हे राजन्, माधव, वृष्णि एवं यादव नाम से प्रसिद्ध हुए। और यदु के पुत्र क्रोष्टा के पुत्र वृजिनवान् थे। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 30)



यदु के पवित्र वंश से यादव, माधव एवं वृष्णि के महान् कुल उत्पन्न होते हैं — वे आदरणीय कुल जिनमें समय आने पर स्वयं भगवान् श्री कृष्ण प्रकट होंगे (श्लोक 27-31)।

यदु के पवित्र वंश से यादवों, माधवों एवं वृष्णियों के महान् कुल उत्पन्न होते हैं — वे नेक कुल जिनमें, समय पाकर, स्वयं परम भगवान् श्री कृष्ण प्रकट होंगे (श्लोक 27-31)।

क्रोष्टा के वंश से महान् योगी शशबिन्दु आए, चौदह प्रकार के रत्नों से युक्त एक चक्रवर्ती सम्राट्, और, अनेक पीढ़ियों के पश्चात्, राजा ज्यामघ।

ज्यामघ एवं विदर्भ का जन्म

ज्यामघ, रानी शैब्या के पति, निःसन्तान थे, फिर भी उसके भय से दूसरी पत्नी लाने का साहस न कर सके। एक बार वे विजय के फल-स्वरूप एक राजकुमारी को घर ले आए; और जब क्रुद्ध शैब्या ने पूछा कि यह कन्या कौन है, उन्होंने उत्तर दिया कि वह उसकी पुत्रवधू है। जब शैब्या ने विरोध किया कि वह बन्ध्या है एवं उसका कोई पुत्र नहीं, राजा ने उत्तर दिया कि वह कन्या उस पुत्र के लिए उपयुक्त होगी जिसे वह अभी जन्म देगी।

अहं बन्ध्यासपत्नी च स्नुषा मे युज्यते कथम् ।
जनयिष्यसि यं राज्ञि तस्येयमुपयुज्यते ॥ ३७ ॥

aham bandhyāsapatnī ca snuṣā me yujyate katham janayiṣyasi yaṁ rājñi tasyeyam upayujyate

अर्थ: “मैं बन्ध्या हूँ एवं मेरी कोई सौत नहीं; मेरी पुत्रवधू कैसे हो सकती है?” और राजा ने उत्तर दिया: “यह उस पुत्र के लिए उपयुक्त होगी, हे रानी, जिसे तुम जन्म देगी।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 37)

स्वर्गलोक के देवताओं एवं पूर्वजों ने स्वयं इस असम्भव-सी प्रतिज्ञा पर अपनी सहमति दे दी, और समय आने पर वह निःसन्तान रानी सचमुच माँ बनी — एक पुत्र जिसका नाम ही आगे चलकर उस कन्या के नए घर, नए राजवंश का नाम बन गया।

अन्वमोदन्त तद्विश्वेदेवाः पितर एव च ।
शैब्या गर्भमधात् काले कुमारं सुषुवे शुभम् ॥ ३८ ॥

anvamodanta tad viśve- devāḥ pitara eva ca śaibyā garbham adhāt kāle kumārāṁ suṣuve śubham

अर्थ: विश्वेदेवों एवं पितरों ने उनके वचनों का अनुमोदन किया; और समय पाकर शैब्या ने गर्भ धारण किया एवं एक सुन्दर पुत्र — विदर्भ — को जन्म दिया, जिसने उसी पतिव्रता कन्या से विवाह किया जो पहले ही पुत्रवधू रूप में स्वीकार की जा चुकी थी। (नवम स्कन्ध, अध्याय 23, श्लोक 38)



निःसन्तान राजा ज्यामघ, अपने ही वचन का सम्मान करते हुए, विश्वेदेवों एवं पितरों द्वारा एक पुत्र — विदर्भ — से धन्य होते हैं, जो उसी राजकुमारी से विवाह करके पिता की प्रतिज्ञा पूर्ण करता है जिसे पहले ही पुत्रवधू के रूप में स्वीकार किया जा चुका था (श्लोक 35-38)।

निःसन्तान राजा ज्यामघ, अपने ही वचनों का मान रखते हुए, विश्वेदेवों एवं पितरों द्वारा एक पुत्र, विदर्भ, से आशीर्वादित होते हैं — जो अपने पिता के वचन को पूर्ण करते हुए उसी राजकुमारी से विवाह करता है जो पहले ही पुत्रवधू रूप में स्वागत की जा चुकी थी (श्लोक 35-38)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की कृपा सच्चाई से आकर्षित होती है। पवित्र ऋषि ऋष्यशृंग निःसन्तान राजाओं को वर्षा एवं सन्तान दोनों दिलाते हैं; जहाँ सच्चाई एवं पवित्रता उपस्थित हैं, वहाँ भगवान् के आशीर्वाद बहते हैं (श्लोक 6-10)।
2. प्रत्येक आत्मा का भगवान् की योजना में एक स्थान है। त्यागा गया शिशु कर्ण पाया एवं पाला जाता है; कोई जीवन सचमुच त्यागा नहीं जाता, क्योंकि भगवान् उनके लिए भी व्यवस्था करते हैं जो प्रवाहित कर दिए जाते हैं (श्लोक 13)।
3. भगवान् के वंश को सुनना स्वयं पवित्र करता है। शुकदेव घोषित करते हैं कि यदु के वंश का वृत्तान्त मात्र सुनना मनुष्य को समस्त पापों से मुक्त करता है — क्योंकि यही वह वंश है जिसे भगवान् ने अपने अवतार हेतु चुना (श्लोक 18-19)।
4. भगवान् हमारे बीच मानव-रूप में अवतरित होते हैं। यदु के वंश में, परमात्मा “मनुष्य के समान” प्रकट होते हैं — एक वंश की परम धन्यता, एवं भगवान् की परम कृपा, जो हमारे पास हमारे ही एक के रूप में आते हैं (श्लोक 20)।
5. श्रद्धा से दिया गया वचन स्वर्ग द्वारा सम्मानित होता है। ज्यामघ का अभी न जन्मे पुत्र के विषय में आत्मविश्वासी वचन विश्वेदेवों एवं पितरों द्वारा धारण किया जाता है। स्वर्ग उनकी श्रद्धा का सम्मान करता है जो विश्वास से बोलते एवं कार्य करते हैं (श्लोक 37-38)।

एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय, अनेक राजवंशों के नामों से सघन, अपने केन्द्र में एक ही देदीप्यमान घोषणा तक उठता है: कि यदु के वंश में स्वयं परम भगवान् मानव-रूप में अवतरित होंगे — और कि इस वंश को मात्र सुनना समस्त पापों से मुक्त होना है। इस बात में कुछ अद्भुत है कि भागवत, अपनी लम्बी वंशावलियों के बीच, इस एक वंश को परम धन्य के रूप में चिह्नित करने के लिए रुकता है, किसी पार्थिव महिमा के लिए नहीं बल्कि इसलिए कि भगवान् ने इसे अपने अवतार हेतु चुना। यह हमें स्मरण कराता है कि सबसे बड़ा सौभाग्य शक्ति या यश नहीं बल्कि भगवान् की निकटता है — और कि भगवान्, अपने असीम प्रेम में, दूर नहीं रहते बल्कि “मनुष्य के समान” उतर आते हैं हमारे बीच वास करने। अध्याय की छोटी कथाएँ शान्तिपूर्वक इसी कृपा की प्रतिध्वनि करती हैं: त्यागा गया बालक कर्ण, नदी-तट पर पाया एवं पाला गया; निःसन्तान राजा एक पवित्र ऋषि द्वारा सन्तान से वरदान पाए; ज्यामघ का श्रद्धामय वचन, स्वयं स्वर्ग द्वारा सम्मानित। सर्वत्र भगवान् कार्यरत हैं, व्यवस्था करते, आशीर्वाद देते, एवं निकट आते। और हमें, जो न राज्य स्थापित कर सकते हैं न महान् यज्ञ कर सकते हैं, अध्याय सबसे सरल कृपा प्रदान करता है: कि भगवान् के अपने वंश की कथा को मात्र सुनना एवं हृदय में धारण करना स्वयं एक पवित्रता है, उस भगवान् के निकट आने का एक मार्ग जो हमारे इतने निकट आए।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अध्याय की इस प्रतिज्ञा को हृदय में धारण करें कि भगवान् के वंश को सुनना आत्मा को पवित्र करता है। श्री कृष्ण के विषय में सुनने या पढ़ने के लिए कुछ मिनट अलग रखें — उनके अवतार की एक कथा, उनकी महिमा का एक श्लोक, प्रेम से दोहराया उनका एक नाम — और उस श्रवण को अपने दिन का शुद्धिकारी स्नान बनने दें, इस प्रार्थना के साथ अर्पित, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” फिर, सन्तान से वरदान पाए निःसन्तान राजाओं एवं नदी-तट पर पाए गए कर्ण की भावना में, विश्वास करें कि कोई सच्ची प्रार्थना एवं कोई त्यागी गई आत्मा भगवान् की व्यवस्था से परे नहीं; उन्हें अपने हृदय की एक अभिलाषा अर्पित करें, एवं किसी ऐसे के प्रति एक दयालुता जो भुला हुआ अनुभव करता है। भगवान् की कथा सुनना एवं उनकी व्यवस्था पर विश्वास करना आपका अभ्यास बने, आपको उस भगवान् के निकट लाते हुए जो, यदु के वंश में, आपके निकट आने के लिए अवतरित हुए।

उपसंहार

पूर्वी राज्यों की एक सूची, वर्षा लाने वाले एक ऋषि, और नदी से उठाए गए एक अनाथ शिशु के रूप में जो आरम्भ हुआ, वह वास्तव में कहीं बड़ी किसी बात की भूमिका बनकर निकलता है: वह क्षण जब शुकदेव अन्ततः इस विशाल वंश-वृक्ष की उस एक शाखा का नाम लेते हैं जिसे स्वयं स्वर्ग ने अलग रखा था — वह वंश जिससे यादव, माधव एवं वृष्णि सभी अपना रक्त-सम्बन्ध जोड़ेंगे, और जिसके माध्यम से स्वयं भगवान् ने जन्म लेना चुना। यह एक तथ्य पहले कही गई हर बात को नया अर्थ देता है — हर समाप्त हुआ सूखा, हर बचाया गया अनाथ, हर सान्त्वना पाई गई निःसन्तान रानी, पीछे मुड़कर देखने पर, इसी की ओर ले जा रहे थे। अध्याय हमें सबसे गहन सान्त्वना के साथ छोड़ता है: कि भगवान्, अपने प्रेम में, हमारे पास हमारे ही एक के रूप में आते हैं, और उनके अवतार की कथा को हृदय में धारण करना स्वयं एक पवित्रता एवं उन तक एक मार्ग है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, त्रयोविंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-23-dynasties-of-the-sons-of-yayati-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट